International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2018; Page No. 109-112

चित्रकूट धाम : पर्यटन में आर्थिक विकास और वर्तमान प्रवृत्ति का अध्ययन

डॉ0 जितेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक भूगोल, विन्ध्यांचल महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
मध्यप्रदेश के चित्रकूट अंचल में भौगोलिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से अनेक आकर्षण विद्यमान है। इन आकर्षणों को देखते हुए क्षेत्र को आकर्षक पर्यटन प्रदेश की तरह एक आकर्षक पर्यटन स्थल होना चाहिए था, किन्तु ऐसा नही हो पाया है। इन्हीं समस्याओं एवं संभावनाओं का पता लगाना तथा पर्यटन एवं तीर्थ यात्रा के प्राचीन स्वरूप में आने वाले परिवर्तन का अध्ययन इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।
किसी भी देश के आर्थिक विकास में पर्यटन के योगदान की सही माप करने में अनेक समस्यायें व सीमायें विद्यमान है। इनके बाद भी आर्थिक विकास में पर्यटन महत्वपूर्ण योगदान करता है सर्व प्रथम यह देश में आय और रोजगार के स्तर में वृद्धि करता है। पर्यटन के कारण देश में परिवहन, आवास, भोजन जैसी आधारित सुविधाओं के उपलब्ध कराने में सम्बद्ध व्यक्तियों की आय बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त मार्गदर्शक (गाइड), फोटोग्राफर, फोटोग्राफी से सम्बन्धित वस्तुओं के विक्रेताओं, पिक्चर पोस्टकार्ड, कलात्मक सजावटी वस्तुयें, पारम्परिक वस्त्रों व आभूषणों तथा इसी प्रकार अन्य वस्तुओं के उत्पादन और विक्रय से जुड़े व्यक्तियों की आय भी पर्यटन के कारण बढ़ जाती है। आय के साथ रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होती है। रोजगार के अवसर पर्यटन से जुड़ी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार की क्रियाओं के विस्तार से उत्पन्न होते है।

मूल शब्द : चित्रकूट धाम, पर्यटन, परिवहन, आवास, भोजन, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना
पर्यटन एक मूल एवं बहुत ही ऐच्छिक क्रिया है जो समस्त जनता एवं सरकारों की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन करने योग्य है।[1] वर्तमान में यह एक उद्योग का रूप ले चुका है। कुछ वर्षो पूर्व तक यात्रा का आनन्द लेना कुछ धनी समृद्ध व साहसिक व्यक्तियों तक ही सीमित था। वर्तमान समय में विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों में उच्च जीवन स्तर, परिवहन क्रांति तथा होटल उद्योग का विकास के फलस्वरूप विदेशों में अवकाश व्यतीत करना मध्यम एवं निम्नवर्गीय परिवारों की पहुंच तक संभव हो गया है। परिणामस्वरूप आज पर्यटन के विभिन्न आयाम देखने को मिल रहे हैं। जहाँ आंरभ में पर्यटन विलासितापूर्ण क्रियाओं के लिए जाना जाता था, वही आंज इसके विविध रूप जैसे – सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, स्वास्थ्य लाभ पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन, सम्मेलन, महासम्मेलन पर्यटन, पर्वतीय पर्यटन, आयुर्वेद पर्यटन, साहसिक पर्यटन आदि है।
अंग्रेजी शब्द "Tourism" का सम्बन्ध "Tour" से है जो कि लेटिन भाषा से लिया गया है।[2] "Tournos" का अर्थ एक औजार से है जो पहिए की भाँति गोलाकार होता है। यह एक गोलाकार पिन है, इसी "Tornon" शब्द से यात्रा चक्र या पैकेज टूर का विचार सृजित हुआ।[3] जो कि आधुनिक पर्यटन का मुख्य आधार है। लगभग 1643 में इस शब्द को प्रयोग विभिन्न स्थानों की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण, पर्यटन तथा विभिन्न राष्ट्रों व क्षेत्रों के स्थलों को भ्रमण या यात्रा करने के लिए किया गया था। "Tour" एक हिब्रू (Hebrew) शब्द है, जो कि हिब्रू शब्द "Torah" से लिया गया है।[4] इसका अर्थ है अध्ययन या खोज। "Torah" यहूदियों के विधान से सम्बन्धित है। यहूदी विधान यहूदियों के रहन–सहन की परिभाषा वर्णित करता है। "Tour" का अर्थ है कि यात्री किसी विशेष स्थान पर जाकर खोज करता है। ठीक इसी प्रकार एक पर्यटक की जिज्ञासा होती है कि वह उस स्थान के बावत् पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें जिसके बावत् उसने सुना तथा साथ ही उसको व्यापार व रोजगार की संभावनाओं के बावत् जानकारी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा लाभ, पर्यावरण एवं मनोरंजन से सम्बन्धित सम्पत्ति के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की लालसा रहती है।
पर्यटन शब्द के अन्तर्गत वे समस्त क्रियायें सम्मिलित हैं जो कि यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। किसी भी यात्रा का पर्यटन से सम्पर्क स्थापित हो जाता है, अगर वह निम्न शर्ते पूर्ण करती हों[5]–

- यात्रा अस्थाई हो।
- यात्रा ऐच्छिक हो।
- यात्रा का उद्देश्य किसी प्रकार का व्यवसायिक न हो।
- यात्रा में किसी प्रकार का पारिश्रमिक अर्जित न होना चाहिए।

चित्रकूट का सामान्य परिचयः
धार्मिक पर्यटन केन्द्र चित्रकूट विन्ध्यांचल में स्थित एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। चित्रकूट पर्यटन केन्द्र प्राचीन काल से ही लोगों का आस्था का केन्द्र रहा है। इस कारण इस स्थल पर देश–विदेश से लोग आकर नतमस्तक हो जाते है। चित्रकूट धाम का वर्णन हमें प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में भी देखने को मिलता है।
चित्रकूट धाम का विस्तार 25°5′ उत्तरी अक्षांश से 25°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 80°45′ पूर्वी देशान्तर से 80°55′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यहाँ का कुल क्षेत्रफल 268 वर्ग कि.मी. है। यह स्थल उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित है। इस कारण यहाँ के कई तीर्थ एवं पर्यटन स्थल मध्यप्रदेश एवं कुछ तीर्थ स्थल उत्तर प्रदेश में स्थित है। इस धार्मिक पर्यटन केन्द्र की विकास योजनाओं के लिए केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार तीनों का सहयोग प्रदान हो रहा है।

पर्यटन की संकल्पना
जब मानव अपने न्यवसित स्थान से बाहर निकल कर दूसरे स्थान पर जाता है और वहाँ कुछ काल तक उसका ठहराव होता है तो उसकी इस क्रिया को पर्यटन कहते है।[6] इस क्रिया में दो विरोधी

बाते सम्मिलित है – एक बाहर की यात्रा और दूसरा वहाँ ठहराव। एक गतिमान और दूसरी स्थैतिक स्थित। ये दोनों क्रियायें साथ–साथ होती है।

पर्यटन एक आनन्दात्मक क्रिया है। इसमें मनुष्य अपने न्यवसित स्थान में अर्जित द्रव्य का व्यय दर्शनीय स्थलों में जाकर तथा उसकी यात्रा में करता है। ऐसी यात्रायें आर्थिक प्रयोजन से नहीं की जाती है। एक सर्वेक्षण के आधार पर अमेरिका में पता लगाया गया है कि पचहत्तर प्रतिशत विदेशी यात्रायें तथा पचास प्रतिशत घरेलू यात्रायें आमोद–प्रमोद के लिए की गई है। इस प्रकार पर्यटन की निम्न अवधारणा व्यक्त की गई है–

"Tourism is the sum of phenomena and relationships arising from the travel and stay of non-residents, in so far as they do not lead to permanent residence and are not connected with any earning activity."

– (Prof. Hunrizkar and Karpet)

पर्यटन करने वाले को पर्यटक कहते है। Dictionary Universal के अनुसार इसका प्रथम प्रयोग 1976 में हुआ। इसका अभिप्राय उस व्यक्ति से है जो यात्रा करता है। उन्नीसवीं शताब्दी के शब्दकोष के अनुसार "पर्यटक वे लोग हैं जो यात्रा के आनन्द के लिए, उत्सुकतावश, समय के सबसे अच्छे उपयोग के लिए या भविष्य में अपनी गरिमा बताने के लिए यात्रा करते है।"

वर्ल्ड टूरिस्ट आर्गनाइजेशन (विश्व पर्यटक संगठन जिसे संक्षपे में WTO के नाम से जाना जाता है) वे पर्यटक को परिभाषित करते हुए बताया है कि वह एक अल्पकालिक आगन्तुक होता है जिसका उस स्थान पर ठहराव कम से कम चौबीस घण्टे का होता है और उसकी यात्रा का उद्देश्य (1) अवकाश काल में – आनन्द, छुट्टी, स्वास्थ्य, अध्ययन, धर्म, संबंधी क्रियायें और खेलकूद या (2) कार्यकाल में – स्वजन मिलन, उद्देश्य की पूर्ति या सम्मेलनों में भाग लेना आदि में से कोई एक हो सकता है।[7]

पर्यटन और आर्थिक विकास

विश्व पर्यटन संगठन में यात्रा और पर्यटन को विशेष रूप से अल्प विकसित देशों में निर्धनता निवारण के प्रमुख माध्यमों में से एक माध्यम के रूप में चिन्हित किया है। यह एक ऐसा आर्थिक क्रियाकलाप है जो विदेशी मुद्रा भी उपलब्ध कराता है। प्रत्येक देश में अनेक ऐसे स्थान होते है जो नगरीय कोलाहल से दूर उपेक्षित क्षेत्रों में प्राकृतिक सौन्दर्य के अनुपम उदाहरण होते है। जब देश में पर्यटन को बढ़ावा देने की योजना बनाई जाती है तब इन प्राकृतिक सुन्दरता वाले उजाड़ स्थानों, बियावान जंगलों में स्थित प्राचीन मंदिरों व अन्य भग्नावशेषों आदि को चिन्हित किया जाता है। वहाँ पर्यटकों को ले जाने हेतु परिवहन के साधनों, निवास हेतु आवास सुविधाओं तथा भोजनादि व्यवस्थाओं का विकास करने के लिए प्रयत्न किये जाते है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप सुदूरवर्ती क्षेत्रों में स्थित इन स्थानों का विकास स्वयमेव होने लगता है। ऐसे बियावान क्षेत्रों को आय उत्पन्न करने वाले उच्च स्तरीय परिसम्पत्तियों में परिवर्तित कर दिया जाता है।

जब कोई भी पर्यटक पर्यटन हेतु अपने देश से बाहर यात्रा पर जाता है तो उसे विभिन्न प्रकार की सेवाओं की आवश्यकता होती है। वह उन सेवाओं को पैसा देकर खरीदता है। उस पैसे को प्राप्त करने वाले लोगों को आय प्राप्त होती है तथा रोजगार मिलता है जो पर्यटन के विभिन्न लाभों के रूप में गिनाये जा सकते है। पर्यटक को निम्नलिखित सेवायें प्राप्त करने हेतु धन व्यय करना पड़ता है–

पर्यटक सेवायें स्वयं पर्यटक के देश में किस प्रकार क्रियान्वित होती है

- रेल्वे स्टेशन या हवाई अड्डे के लिए टैक्सी
- सामान उठाने के लिए कुली
- रेलवे या हवाई जहाज का टिकट
- अखवार, पत्रिकाएँ एवं पुस्तके
- रेस्टोरेन्ट में खान–पान पर किया गया खर्च आदि।

अवकाशकालीन स्थल पर पहुंचने पर निम्न सेवाओं पर व्यय

- कुली की सेवायें एवं होटल के लिए टैक्सी
- ट्रेवल एजेन्सी पर किया गया व्यय
- मनो विनोद पर व्यय
- साइट सीन के लिए वाहनों पर व्यय
- पेय पदार्थो पर व्यय
- फुटकर व दैनिक उपयोग की सामग्री पर व्यय
- स्थानीय कला खरीदी पर व्यय
- मोची, धोबी तथा लाउण्ड्री पर व्यय
- जलपान व भोजन पर व्यय
- आवास या होटल पर व्यय
- स्थानीय अभिकर्ता (गाइड) पर व्यय
- अन्य सेवाओं पर व्यय

उपरोक्त सेवाओं को प्राप्त करने हेतु पर्यटक जब पैसा खर्च करता है तो कई वर्ग के लोग उससे लाभान्वित होते है। वस्तुओं की बिक्री से उससे सम्बन्धित उद्योगों को भी प्रोत्साहन मिलता है। न केवल उद्योगों को बल्कि वह कृषक जो दूध, अण्डे व सब्जी का उत्पादन करता है वह भी लाभान्वित होता है। वह कलाकार जो मिट्टी या स्थानीय सामग्री से बनी हुई बस्तुओं को बेंचता है, उसे न केवल रोजगार प्राप्त होता है बल्कि ऐसी कलाओं को संरक्षण प्राप्त होता है। इस तरह यह उद्योग बड़े, बूढ़ों, किसानों, व्यापारी, कलाकार, शिल्पकार आदि समाज के अनेक वर्गों के लाखों को कई प्रकार से लाभान्वित करता है।

पर्यटन की वर्तमान प्रवृत्ति

भूगोलवेत्ता तथा सामाजिक विज्ञानवेत्ता इस विषय के लक्ष्य एवं उद्देश्य पर शोध संगोष्ठियों, परिसंवाद, कार्यशाला तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैचारिक आदान प्रदान करते रहे हैं, परिणामस्वरूप पर्यटन का स्वरूप एक अर्न्तवैज्ञानिक विषय के रूप में उभर कर सामने आया है। पर्यटन में सामाजिक, सांस्कृतिक विकास की अपार क्षमता है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा। सन् 1999 को 'भारत देखों सहस्त्राब्दि वर्ष' के रूप में घोषित किया गया था। वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग की नूतन प्रवृत्तियाँ इस प्रकार उभर कर प्रस्फुटित हुई है[8]–

- विरासत में सौन्दर्यीकरण की प्रवृत्ति।
- राष्ट्रों के बीच सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान की प्रवृत्ति।
- सांस्कृतिक संरक्षण की अवधारणा (स्थानीय कला, शिल्पकला लालित्य साहित्य के प्रोत्साहन की प्रवृत्ति)।
- उत्तरोत्तर विकास की प्रवृत्ति (महोत्सव, त्योंहारों का प्रोत्साहन,

स्मारकों का नवीनीकरण, तीर्थ यात्री केन्द्रों का विकास, ऐतिहासिक खेल सुविधाओं का विकास)।
- साहसिक पर्यटन के नये आयाम की प्रवृत्ति, चट्टानों पर चढ़ाई, ट्रेकिंग रिवर राफ्टिंग, माउन्टेनियरिंग, स्कीनिंग एवं पैराग्लाइडंग, केनोइन, क्याकिंग)।
- पुरातात्विक संरक्षण की प्रवृत्ति।
- अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन की प्रवृत्ति।
- पर्यावरण विकास की प्रवृत्ति।
- पर्यटन के लिए प्रादेशिक नियोजन की प्रवृत्ति।
- पर्यटन में विशेषीकरण की प्रवृत्ति।
- विनोद स्थल अथवा विश्राम स्थल विकास की प्रवृत्ति।
- वहनीय पर्यटन की प्रवृत्ति।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन से उत्पन्न मुख्य अत्याधुनिक अवधारणायें निम्नलिखित हैं
- विश्वस्तर पर पर्यटन को मान्यता।
- पर्यटन का वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण व अध्ययन की प्रवृत्ति।
- व्यवस्थित सिद्धांतों का निर्माण की प्रवृत्ति
- पर्यटन की विशिष्ट शाखाओं की उत्पत्ति व विकास की प्रवृत्ति।
- पर्यटन के आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति।

वर्तमान में पर्यटन को सर्वसुलभ बनाने, सुविधाजनक बनाना, अच्छे होटलों, रेस्तरां, पिकनिक रिसोर्टस, आधुनिक टेकनोलॉजी पर आधारित पर्यटन उपकरणों (मोटर–कार, हवाई जहाज, रोप वे आदि) पर्यटन के द्वारा विश्व बन्धुत्व व शांति की भावना बढ़ाना। संस्कृतियों का आदान–प्रदान आदि इस प्रवृत्ति के ही उदाहरण है।
पर्यटक कोई भी वह व्यक्ति है जो किन्ही कारणों (स्वास्थ्य, मनोरंजन, खेल, व्यापार, ज्ञान आदि) से यात्रा कर रहा हो और कम से कम एक स्थान पर 24 घंटे रुक सकता हो तथा 6 माह से अधिक न रुकता हो। वह लाभ कमाने के उद्देश्य से न आया हो, जबकि तीर्थ यात्री धर्म के प्रति आस्था रखते हुए यात्रा करने वाला वह व्यक्ति है, जो कि किसी फल या इच्छा (मुख्यतः भगवद् प्राप्ति की इच्छा) से किसी तीर्थ की यात्रा कर रहा हो तथा वह तीर्थयात्रा के सामाजिक नियमों का पालन कर रहा हो।

पर्यटन के आधारभूत तत्व
किसी भी प्रदेश में पर्यटन के संवर्धन हेतु कुछ विशिष्ट परिस्थितियों का विद्यमान होना अत्यावश्यक होता है। पर्यटन का विकास केवल आकर्षक दृश्य होने से ही संभव होता है, अपितु इसके विकास के लिए कुछ आधारभूत तत्वों की आवश्यकता होती है। उनमें से तीन प्रमुख है[10] – परिवहन, पर्यटन केन्द्र की स्थिति तथा आवास।
पर्यटन की सफलता निम्नलिखित तीन कारकों द्वारा निर्धारित होती है–

आकर्षण – जलवायु, दृश्य सौन्दर्य, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आकर्षण।

सहज पहुँच – पर्यटन केन्द्रों में पर्यटकों की सुविधापूर्ण पहुंच में परिवहन की सुविधायें एवं परिवहन मार्ग विशेष प्रभाव डालते है।

सुविधाएँ – आवास, भोजन, मनोरंजन, स्वास्थ्य, संचार एवं संवाद, वाहन तथा सुरक्षा संबंधी सुविधायें।

किसी भी स्थान के पर्यटन विकास में उपरोक्त तीन आधारभूत कारक सबसे अधिक प्रभावित करते है।
पीर्टस महोदय ने पर्यटन विकास हेतु निम्न आधारभूत तत्वों को गिनाया है, जो सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है–

सारणी 1: पर्यटन आकर्षण के तत्व

क्र	प्रमुख तत्व	आकर्षण
1.	संस्कृति	पुरातात्विक महत्व के स्थान व क्षेत्र, ऐतिहासिक इमारतें व स्मारक, ऐतिहासिक महत्व के स्थल, आधुनिक सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक व आर्थिक संस्थायें।
2.	परम्परा	राष्ट्रीय उत्सव, हस्तकला एवं लोक कलायें, संगीत, लोकगीत, स्थानीय जीव एवं प्रथायें।
3.	दृश्य सौन्दर्य	नैसर्गिक सौन्दर्य, राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीवन, जीव एवं वनस्पतियां, समुद्री किनारे, सुन्दर पर्वतीय आवासीय स्थल, जल प्रपात, कन्दरायें, भू–गर्भिक स्वरूप आदि।
4.	मनोरंजन	खेलों का आयोजन, प्रदर्शनी, चिड़ियाघर, सिनेमा व थियेटर, कैसिनों, नाइट लाइफ आदि।
5.	अन्य आकर्षण	स्वास्थ्य प्रद जलवायु, स्वास्थ्य वर्द्धक केन्द्र, औद्योगिक आकर्षण।

स्त्रोत – Singh, Arun Pratap: Himalayan Environment & Tourism, P. 9

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी स्थान में पर्यटन के लिए उपरोक्त आकर्षण की आवश्यकता होती है, जो चित्रकूट अंचल में विद्यमान है।

निष्कर्ष
पर्यटन का परिचायात्मक स्वरूप के अन्तर्गत पर्यटन का अर्थ, परिभाषा, आधारभूत तत्व एवं पर्यटन की वर्तमान संदर्भ में आवश्यकता को प्रतिपादित किया गया है। पर्यटन की संकल्पना, पर्यटन की वर्तमान प्रवृत्तिया एवं पर्यटन के विकास को बताया गया है। प्रकृति प्रदत्त अनुकूल प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखते हुए अपने देश के हृदय में स्थित मध्यप्रदेश के चित्रकूट प्रदेश को एक आदर्श पर्यटन केन्द्र होना चाहिए था, किन्तु कई कारणों से ऐसा नही हो सका हैं जहाँ एक ओर दस्यु प्रभावित क्षेत्र होना इसके लिए जिम्मेदार रहा है, वहीं पर्यटन के लिए आवश्यक एवं बुनियादी सेवाओं का अभाव भी रहा है। कहीं कई पर्यटक स्थलों की पहचान न हो सकना एवं प्रचार–प्रसार का अभाव है तो कहीं विदेशों में फैली हमारे बारे में प्रचलित भ्रांतियां भी आड़े आई है।

सन्दर्भ

1. नेगी, जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृ. 1.
2. नेगी, जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृ. 12.
3. नेगी, जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृ. 13.

4. सहाय, शिवस्वरूप, पर्यटकों का देश भारत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 71.
5. सहाय, शिवस्वरूप, पर्यटकों का देश भारत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 72.
6. सिंह, नीतू, रीवा जिले में धार्मिक पर्यटन केन्द्रों का भौगोलिक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध (2001–02) शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.), पृ. 3.
7. शुक्ल, ए.के. (1991) उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग, तिवारी पब्लिकेशंस, शाहदरा, दिल्ली पृ. 14.
8. सिंह, बी.पी. (2004) म.प्र. में पर्यटन विकास की समस्यायें एवं संभावनायें, लघु शोध परियोजना प्रतिवेदन यू.जी.सी./सी.आर. ओ. भोपाल.
9. नेगी, जगमोहन, टूरिज्म एण्ड होटलीयरिंग 1982, पृ. 76